हैरिएट टबमैन

आज़ादी की राह

हैरिएट टबमैन

आज़ादी की राह

लेखक : रे बैन्स

चित्रसज्जा : लैरी जॉनसन

मेरीलैंड की चेसापीक खाड़ी के पूर्वी तट का इलाका बहुत ख़ूबसूरत था। खाड़ी का पानी मछलियों, घोंघों और सीपियों से भरा था। जंगलों में खरगोश, हिरन, छछूंदर व अन्य बहुत से जानवर रहते थे। वहां की उपजाऊ मिट्टी में गेहूं, मक्का, तम्बाकू और साग-सब्ज़ियां बहुतायत से पैदा होती थीं।

अठारहवीं शती के प्रारम्भ के समय मेरीलैंड रहने के लिए एक बहुत ही अच्छी जगह थी - बशर्ते की आप एक आज़ाद इंसान हों। लेकिन बेन रॉस और हैरिएट ग्रीन आज़ाद नहीं थे। वे एडवर्ड ब्रोडस नाम के एक बागानों के मालिक के गुलाम थे। वे उसके बागानों में काम करते थे, लकड़ी काटते, व अन्य घरेलू काम करते। जो भी वह कहता, उन्हें करना होता था। और उनके बच्चों के साथ भी यही स्थिति थी।

इन गुलामों को चैटेल (chattel) भी कहा जाता था। इसका मतलब था कि वे भेड़-बकरियों, कपास की गांठों या घर के असबाब की तरह ही मालिक की जायदाद का एक हिस्सा थे। इन गुलामों को मालूम था कि उन्हें कभी भी बेचा जा सकता था। यह भी हो सकता था कि उनके बच्चों को उनसे छीन कर उनसे बहुत दूर भेज दिया जाए, या उनकी मार-पिटाई की जाये। और उन्हें यह भी पता था कि उनके मालिकों को यह सब करने के लिए कभी कोई सजा नहीं मिलेगी। क्योंकि गुलामों के कोई अधिकार नहीं थे। उन्हें किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने, या यहाँ तक कि गिरिजाघर जाने का भी अधिकार नहीं था।

सन १८२० के आस-पार, एक ऐसी दुनिया में हैरिएट रॉस का जन्म हुआ था। वह बेन रॉस और हैरिएट ग्रीन के ग्यारह बच्चों में से छठी संतान थी। वे सभी एक छोटे से एक कमरे के झोंपड़े में रहते थे। उसका फर्श मिटटी का था, और उसमें न तो कोई खिड़की थी, और न ही कोई असबाब।

उनके पार चारपाइयाँ नहीं थीं। पूरा परिवार फर्श पर ही फूस और टाट बिछा कर सोता था। खाना खाने के लिए उनके पास थालियां या कटोरियाँ भी नहीं थीं। वे अपना भोजन, जैसे मक्का का दलिया आदि, सीधे कढ़ाई से ले कर खाते थे। वे किसी पत्थर के टुकड़े या सीपी के खोल को चम्मच की तरह इस्तेमाल करते थे।

और खाना उन्हें झोंपड़े के कड़े फर्श पर बैठ कर या खड़े होकर खाना होता था।

इन गुलाम बच्चों का खेलने-कूदने वाला बचपन लगभग न के बराबर होता था। बहुत जल्दी ही उन्हें काम पर लगा दिया जाता था, और उन्हें अपनी रोज़ी-रोटी खुद कमानी पड़ती थी। हैरिएट जब बहुत छोटी ही थी, उसे ब्रोडस परिवार के भाग-दौड़ वाले कामों पर लगा दिया गया। उसे दस-दस मील दूर संदेशा पहुँचाने जाना पड़ता था, दूर-दराज़ जंगलों, और नदी किनारे की सड़कों से होकर।

हैरिएट के जीवन के इक्का-दुक्का ख़ुशी-भरे पल केवल उसे अपने परिवार से ही मिलते थे। वे सभी उसे इतना प्यार करते थे, कि मुश्किलों भरे समय में भी उसे अपने परिवार के साथ बिताया समय बड़ा प्रिय लगता था। और बहुत वर्षों बाद एक दिन हैरिएट ने अपने परिवार का यह ऋण बड़े अनोखे रूप में चुकाया। वह अपने छः भाइयों और एक बहन सहित पूरे परिवार को गुलामी से मुक्त करा कर उत्तरी क्षेत्र में आज़ादी से रहने के लिए ले गई।

जब वह पांच वर्ष की हुई, हैरिएट को एक नया काम दे दिया गया। श्रीमती ब्रौडस ने उसे अपनी हवेली, जिसे बड़ा घर भी कहा जाता था, के काम पर लगा दिया। उस छोटी सी लड़की को घरेलू काम-काज के बारे में कुछ भी नहीं पता था। वह तो गुलामों के एक कमरे के झोंपड़ों के अलावा सही मायने में घर कहलाने लायक किसी घर में कभी गई ही नहीं थी। और फिर, हवेली में जो काम उसे करने होते थे, किसी ने उसे वे काम करना सिखाया भी नहीं।

इसलिए कोई आश्चर्य नहीं, कि वह अक्सर ही अपने काम में गलतियां कर बैठती थी। और जब वह ऐसा करती, तो उसे सजा दी जाती थी।

जब हैरिएट छः वर्ष की थी, उसे कुक परिवार के साथ रहने के लिए भेज दिया गया। वह परिवार बुनकर का काम करता था, और उनका घर ब्रोडस के बागान से बहुत दूर था। हैरिएट को अपने परिवार से इतनी दूर रहना बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन ब्रोडस चाहते थे कि वह बुनकरी का काम सीखे, जिससे की वह ब्रोडस परिवार के लिए कपडे बना सके। इसलिए, इच्छा न होते हुए भी हैरिएट को वहां जाना पड़ा।

कुक परिवार के साथ भी हैरिएट की ज़िन्दगी उतनी ही ख़राब थी, जितनी ब्रोडस के बागान पर। लेकिन हैरिएट वहां ज़्यादा दिन रुकी नहीं। हालाँकि उसे चेचक हो गई थी, और वह बहुत बीमार थी, लेकिन फिर भी कुक साहब ने उसे नदी किनारे भेजा, और कहा कि वह छछूंदर पकड़ने के लिए वहां लगाए गए जाल का मुआयना करके आये। इसके लिए उसे बर्फ सी ठंडी तेज़ बहती नदी को पैदल चल कर पार करना था।

अगले दिन हैरिएट का खांसी से बुरा हाल था, और उसका पूरा बदन काँप रहा था। उसका शरीर बुखार से जलने लगा, और वह कोई भी काम करने में असमर्थ थी। वह एक कोने में पड़ी यह सब झेल रही थी। उसकी बीमारी की खबर गुलामों में तेज़ी से फैली, और उसकी माँ तक जा पहुंची।

उसने ब्रोडस साहब से मिन्नत की कि उसकी बेटी को घर वापस लाया जाये, और वह इसके लिए तैयार भी हो गए। भला वह कुक परिवार को उसे बुनकरी सिखाने के लिए पैसा क्यों देते, जब वह बीमारी के कारण कुछ सीख ही नहीं पा रही थी। इसलिए उन्होंने हैरिएट को घर वापस बुला लिया। फिर उसकी माँ ने उसकी देखभाल की, जिससे उसकी सेहत ठीक हुई।

फिर हैरिएट को श्रीमती ब्रोडस के नन्हे बच्चे की देखभाल का काम दे दिया गया। बहुत सालों बाद हैरिएट ने इस काम का ज़िक्र इस प्रकार किया। "मैं केवल सात वर्ष की थी, जब मुझे उस नन्हे से बच्चे की देखभाल का काम दे दिया गया। मैं इतनी छोटी थी कि मुझे ज़मीन पर बैठ कर बच्चे को अपने गोद में लेना पड़ता था। और सोने, या माँ का दूध पीने का समय छोड़ कर, वह हमेशा मेरी गोदी में ही रहता था।"

नन्ही सी हैरिएट के लिए इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी उठाना बड़ा मुश्किल था। उसके पास खेलने या अकेले रहने के लिए कोई समय नहीं था। ब्रोडस साहब और उनकी पत्नी लगातार उसपर नज़र रखते, और उसके साथ सख्ती से पेश आते थे। हैरिएट को पता था कि उससे कोई भी चूक हुई, तो उसकी पिटाई की जाएगी। इस प्रकार की सजा गुलामों को अक्सर ही दी जाती थी।

मालिक चाहते थे कि गुलाम उनसे डर कर रहें। वे नहीं चाहते थे कि गुलाम उनका प्रतिकार करे, उन्हें पलट कर जवाब दें, या उन्हें छोड़ कर भागने की हिम्मत करें।

लेकिन फिर भी ये मालिक गुलामों के हौसले को तोड़ न सके। अक्सर ही कुछ गुलाम अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाते रहते थे। मनाही के बावजूद वे निडर होकर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करते। चोरी छिपे वे पढ़ना-लिखना भी सीखते। अपने मालिकों से भाग कर उत्तर की ओर जाने वाले अन्य गुलामों की वे छुपने की जगह और खाना-पीना देकर मदद करते।

और हर वर्ष गुलामों की बगावत की ख़बरें आती रहती थीं। बागानों के मालिक इन ख़बरों को दबाने की कोशिश करते रहते थे। वे नहीं चाहते थे कि उनके अपने गुलामों को ऐसी ख़बरें पता चलें, क्योंकि शायद फिर वे भी बगावत करने की सोचें। लेकिन फिर भी ऐसी ख़बरें छिपती नहीं थीं। एक गुलाम से दूसरे को, और एक बागान से अगले में, पूरे दक्षिणी क्षेत्र में ये ख़बरें फ़ैल ही जाती थीं। हालाँकि बागान-मालिक एक दूसरे को और सारी दुनिया को यही बताते कि गुलाम पूरी तरह संतुष्ट हैं, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। गुलामों को सच्चाई अच्छी तरह पता थी।

जब वह बहुत छोटी थी, तभी से हैरिएट गुलामों की बगावत की कहानियां सुनती आ रही थी। उसने गेब्रियल प्रॉसर नाम के एक गुलाम के बारे में सुना था। १८०० ईस्वी में प्रॉसर ने एक बड़ी बगावत की योजना बनाई थी। एक हज़ार से भी ज़्यादा गुलाम उसका साथ देने को तैयार थे। लेकिन आखिरी समय पर उसकी योजना विफल कर दी गई, जब एक मुखबिर गुलाम ने कई बागान-मालिकों को इसकी खबर दे दी।

हैरिएट ने डेनमार्क वेसे के बारे में भी सुना था, जो कहता था कि सभी इंसान बराबर हैं। वेसे, जो कि पहले गुलाम रह चुका था, अब एक आज़ाद नीग्रो था। वह दक्षिण कैरोलिना के हज़ारों गुलामों का नेता भी था। जून १८२२ में वेसे के समर्थक आज़ादी के लिए बगावत करने को तैयार थे। लेकिन कुछ घबराये हुए गुलामों ने गेब्रियल प्रॉसर की तरह ही उसकी योजना की भी मालिकों को खबर दे दी।

हैरिएट ने दक्षिण के अनेक भागों में हो रही बगावत की छोटी-बड़ी घटनाओं के बारे में सुना था। इस सब से उस छोटी बच्ची को यह ज़रूर समझ आया कि वह अमेरिका में अकेली नहीं थी, जो इस गुलामी-प्रथा से क्रुद्ध थी। वह मन ही मन कहती कि एक न एक दिन मैं ज़रूर आज़ाद होउंगी, और जब वह दिन आएगा, मैं दूसरों को भी आज़ादी दिलाऊंगी।

हैरिएट ने अपनी ये भावनाएं किसी से छिपा कर नहीं रखीं। वह बागान के दूसरे गुलामों से इस विषय में निडरता से बात करती। और ब्रोडस परिवार के सम्मुख न वह कभी मुस्कुराती, और न ही यह दिखाने की कोशिश करती कि वह अपने हाल में खुश है।

हैरिएट की माँ को उसकी चिंता होती थी। यदि हैरिएट ने ब्रोडस साहब या उनकी पत्नी को नाराज़ कर दिया तो कहीं वे उसे गुलामों के किसी सौदागार को न बेच दें। फिर वह सौदागर उस नए गुलाम को दक्षिण के दूर दराज़ इलाके में ले जाकर चावल या कपास के खेतों में काम पर लगा देगा। मेरीलैंड में गुलामों का जीवन बहुत दुष्कर था। लेकिन दूर दक्षिण में हालात उससे भी दस गुना बुरे थे।

हैरिएट का स्वाभिमानी और अवज्ञाकारी रवैया श्रीमती ब्रोडस को बिलकुल पसंद न था। उन्होंने इस बच्ची के साहस को तोड़ने का निश्चय किया। इसलिए उन्होंने उस नौ साल की बच्ची को एक दूसरे परिवार में काम करने के लिए भेज दिया। वे लोग उससे दिन भर घर की सफाई का काम करवाते।

और फिर रात में भी उसे एक बच्चे की देख-रेख का काम करना होता। रोज़ ही उसे बिना कारण कुछ न कुछ सजा दी जाती। और उसे मुश्किल से ज़िंदा रहने भर को खाना दिया जाता।
कुछ समय बाद हैरिएट सूख कर हड्डियों का ढांचा भर रह गई। उसकी हालत काम करने लायक नहीं रही। अब उसकी हिम्मत टूट चुकी है, ऐसा सोच कर उस परिवार ने उसे वापस ब्रोडस के बागान पर भेज दिया। उसका शरीर अत्यंत निर्बल और क्षीण हो गया था, लेकिन उसकी हिम्मत नहीं। वह अभी भी मज़बूत थी।

हैरिएट के माता-पिता ने उसका खोया स्वस्थ्य वापस लाने के लिए जी जान लगा दिया। हैरिएट की माँ को जब भी समय मिलता वह अपनी बेटी की सेवा करती। इस दौरान बेन ने उसे बहुत सी उपयोगी और विस्मयकारी बातें सिखाईं। हालाँकि बेन कभी स्कूल नहीं गया था, पर वह एक बहुत बुद्धिमान व्यक्ति था। उसे प्रकृति की बहुत सूक्ष्म जानकारी थी। अगर पतझड़ के मौसम में जानवरों के शरीर पर अधिक बाल उगते तो वह समझ जाता था कि इस बार कड़ाके की सर्दी पड़ने वाली है। उसे पता रहता था कि नदी में किस जगह मछलियां अधिक मिलेंगी। उसे यह भी पता था कि कौन से जंगली पेड़-पौधों के फल खाने के लिए सुरक्षित थे। जैसे ही हैरिएट थोड़ा चलने-फिरने लगी, वह रविवार की दोपहरों को उसे जंगल में नदी-किनारे सैर के लिए ले जाने लगा।

हैरिएट को अपने भाई-बहनों से भी बहुत शक्ति मिली। दिन भर चिचिलाती धूप में खेतों में काम करने के बाद वे शाम को घर लौटते। घर लौट कर वे हैरिएट को दिन भर की ख़बरें बताते। उसे गीत गा कर सुनाते। कहानियां सुनाते। उसे चुटकुले सुना कर हँसाते। वे वह सब कुछ करते जिससे उनकी छोटी बहन को थोड़ी ख़ुशी मिल सके।

हैरिएट की शक्ति का दूसरा स्रोत था उसकी आस्था। गुलामों को अपना खुद का गिरिजाघर चलाने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन वे बहुत धार्मिक थे, और हर रविवार को प्रार्थना-सभा आयोजित करते थे। हरेक बागान में एक न एक एक गुलाम ऐसा ज़रूर होता था, जिसे बाइबिल की अच्छी जानकारी होती थी। और ऐसे ही व्यक्ति से अन्य गुलाम बाइबिल की कहानियां और प्रार्थनाएं सीखते थे।

बाइबिल की सभी कहानियों में गुलामों को सबसे अच्छी लगती थी हज़रत मूसा की कहानी। मूसा ने इज़रायल के लोगों को गुलामी से छुटकारा दिलाया था। सभी गुलाम प्रार्थना करते कि उन्हें भी अपना एक मूसा मिले जो उन्हें आज़ादी दिलाये।

हैरिएट को गहरा विश्वास था कि एक दिन उसके लोगों के दिन फिरेंगे। उसे विश्वास था कि अंततः वे अवश्य स्वतंत्र होंगे। उसे बाइबिल के इस कथन पर पूरी आस्था थी कि ईश्वर की दृष्टि में सभी इंसान बराबर हैं।

अगले तीन वर्षों में हैरिएट शरीर से स्वस्थ हुई, और उसकी आस्था और मज़बूत हुई। जैसे ही वह पूरी तरह स्वस्थ हुई, ब्रोडस साहब ने उसे एक दूसरे मालिक को किराये पर दे दिया। यह मालिक उससे वयस्क गुलामों के करने लायक मुश्किल काम करवाता। उसे लकड़ी ढोने, और लोहे की सरियों को काटने जैसे मुश्किल काम दिए गए। इतनी मुसीबतों के चलते, और हालात के बर्दाश्त से बाहर होने के बावजूद उसने कभी हिम्मत नहीं हारी।

ग्यारह साल को होते-होते हैरिएट शरीर से हृष्ट-पुष्ट और बहुत ताकतवर हो गई थी। वह किसी वयस्क की तरह ही लम्बे समय तक कड़ी मेहनत कर सकती थी। जब ब्रोडस साहब ने यह देखा तो उसे खेतों में काम पर लगा दिया। खेतों में काम करने वाली दूसरी स्त्रियों की तरह ही हैरिएट भी अपने सर पर एक लम्बा रूमाल बांध कर रखती थी। ऐसा रूमाल वह सारी ज़िन्दगी अपने सर पर पहनती रही।

यह उसे अपने गुलामी के जीवन की याद दिलाता था, और यह भी, कि अब उस ज़िन्दगी से वह कितनी दूर आ चुकी थी।

१८३१ में गुलामों के लिए और अधिक कठोर कानून बनाये गए। अब उन्हें समूह में इकठ्ठा होने की इजाज़त नहीं थी। काम करते समय उन्हें एक दूसरे से बातचीत करने की भी इजाज़त नहीं थी। अपने मालिक की इजाज़त की बिना उनका सड़कों पर चलना भी मना था। पुराने नियमों को भी और अधिक कड़ा कर दिया गया। इस सब का कारण था नैट टर्नर नाम के एक व्यक्ति की अगुआई में की गई एक बगावत।

नैट टर्नर वर्जीनिया राज्य में एक गुलाम था। १८३१ की ग्रीष्म ऋतु में "पैगम्बर" कहे जाने वाले इस व्यक्ति ने एक खुनी बगावत में लगभग सत्तर गुलामों के एक समूह की अगुआई की। बगावत को रोकने के लिए सशस्त्र सेना को बुलाना पड़ा, और टर्नर को गिरफ्तार करने में तीन महीने का समय लग गया।

गुलामों के मालिक डर गए थे। यदि वर्जिनिया में बगावत हो सकती थी, तो कहीं भी हो सकती थी। यह चिंता उन्हें खाये जा रही थी। इसीलिए उन्होंने गुलामों के लिए और कड़े क़ानून बनाये।

लेकिन नैट टर्नर ने बहुत से गुलामों के भीतर आज़ादी की एक मशाल जला दी थी। हैरिएट भी उनमे से एक थी। "मैं चाहती हूँ कि मैं भी वही करूँ जी नैट टर्नर ने किया", एक रात उसने अपने परिवार से कहा। "गुलाम बने रहने से तो मर जाना बेहतर है।"

उसके भाई विलियम ने कहा, "उससे भी बेहतर है स्वतंत्र होकर जीवित रहना।"

"लेकिन ऐसा होगा कैसे?" हैरिएट ने उससे पूछा। "तुम्हें पता है कि ब्रोडस साहब हमें कभी आज़ादी नहीं देंगे।"

"वह हमें क्या देंगे, मैं उसकी बात नहीं कर रहा हूँ," विलियम ने कहा। "मैं बात कर रहा हूँ उस चीज़ की जो हम खुद हासिल करेंगे - यानि भूमिगत रेल पर आज़ादी का सफर।"

"वह क्या होता है?" हैरिएट ने पूछा।

फिर विलियम ने हैरिएट को टाइस डेविड्स की दास्तान सुनाई। डेविड्स कैंटकी का एक गुलाम था जो अपने मालिक को छोड़ कर भाग गया। जब उसके मालिक को यह पता चला तो वह उसका पीछा करने निकला। डेविड्स ने ओहायो नदी तैर कर पार की, जब कि उसका मालिक नाव से उसका पीछा कर रहा था। जब तक मालिक की नाव दूसरे किनारे पहुंची, टाइस डेविड्स का कहीं अता-पता न था। मानो हवा उसे निगल गई हो।

असल में गुलामी-प्रथा से घृणा करने वाले कुछ लोग उसकी मदद कर रहे थे। लेकिन बागान-मालिक को यही लगा कि वह गायब हो गया। जब मालिक वापस लौटा तो उसने सबसे कहा, "टाइस डेविड्स ऐसे गायब हुआ जैसे कि उसे कोई भूमिगत सुरंग का रास्ता मिल गया हो।"

यह कहानी बार बार दोहराई गई, और एक कान से दूसरे कान फैली। जल्दी ही गुलामों में आज़ादी की ओर ले जाने वाली इस अद्भुत सुरंग का ज़िक्र हो रहा था। निश्चय ही, दक्षिण से उत्तर को जाने वाली ऐसी कोई भूमिगत सुरंग या सड़क नहीं थी। लेकिन फिर भी गुलाम एक दूसरे को यह कहानी सुनाते रहे। इसमें उन्हें उम्मीद की एक किरण दिखाई देती थी।

उन्हीं दिनों अमेरिका में पहले-पहल रेल की पटरियां बिछनी शुरू हुई थीं। रेलगाड़ी जितना तेज़ यात्रा का साधन लोगों ने इससे पहले कभी नहीं देखा था। गुलामों ने भी रेलगाड़ी के बारे में सुना। और जल्दी ही लोग भूमिगत रेलगाड़ी की बातें करने लगे, जो भगोड़े गुलामों को शीघ्रता से सुरक्षित उत्तरी क्षेत्रों को ले जाती थी।

रेलगाड़ियों या भूमिगत सुरंगों का सच्चाई से कोई लेना-देना नहीं था। लेकिन यह ज़रूर सच था कि ऐसे बहुत से लोग थे, जो अपनी जान खतरे में डाल कर भी गुलामों को आज़ाद करवाने में मदद कर रहे थे। इनमे से कुछ इन भगोड़ों को अपने घरों के तहखानों, या अन्य गुप्त स्थानों में छिपने को जगह देते थे।

इन साहसी लोगों को स्टेशनमास्टर कहा जाता था। छिपने के स्थानों को स्टेशन या डिपो कहा जाता था। कुछ अन्य लोग भगोड़ों को एक "स्टेशन" से दूसरे स्टेशन अपनी गाड़ियों या घोड़ों पर, या पैदल ही ले जाते। इन लोगों को कंडक्टर कहा जाता था। और भागने वाले गुलामों को यात्री या पार्सल कहा जाता था। बच्चे को छोटा पार्सल और वयस्क को बड़ा पार्सल कहते थे।

जब से विलियम ने हैरिएट को भूमिगत रेल के बारे में बताया था, वह लगातार उसके बारे में ही सोचती रहती थी। वह खुद से कहती, हो सकता है कि मुझे भी इस आज़ादी की रेलगाड़ी के सफर का मौका मिल जाये। शायद हम सभी को मिल जाये। जैसे यही एक उम्मीद उसके जीवन को चला रही थी।

जब हैरिएट १५ साल की थी, कुछ ऐसा हुआ जिससे लगा कि शायद उसकी यह उम्मीद ही नहीं, उसका जीवन भी समाप्त हो जाने वाला था। सितम्बर महीने की एक शाम कुछ खरीदने के लिए उसे गांव की एक दूकान पर भेजा गया। जब वह वहां थी, उसी समय एक गुलाम वहां दौड़ता हुआ आया। वह बैरेट नाम के एक किसान का गुलाम था। क्षण भर बाद ही बैरेट भी उसके पीछे वहां आया, और चिल्ला कर बोला, "वापस चल खेत पर !"

गुलाम चुपचाप उसकी ओर देखता रहा। दूकान में बाकी लोग भी स्तब्ध खड़े थे।

"मैं तुझे कोड़े लगाऊंगा" बैरेट ने उसे धमकाया। जब गुलाम उसकी न सुन कर वहां से जाने लगा, तो वह फिर चिल्लाया, "रुक-रुक"। फिर उसने हैरिएट और उसके नज़दीक खड़े एक दूसरे लड़के की ओर देख कर कहा, "पकड़ो उसे, जिससे कि मैं उसे रस्सी से बांध सकूँ।"

हैरिएट ने उसकी बात नहीं सुनी, और उस लड़के को भी कुछ करने से रोक दिया।

वह गुलाम अचानक दरवाज़े की ओर भागा। बैरेट ने झपट के दूकान में से एक वज़नी बाँट उठा लिया, और फ़ेंक कर उसे मारा। लेकिन उसका निशाना चूक गया। लोहे का वह भारी बाँट हैरिएट के सर में जाकर लगा। वह तुरंत ज़मीन पर गिर पड़ी, और बेहोश हो गई।

अगले दो-तीन महीने तक हैरिएट ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलती रही। कुछ समय तो वह खाना भी नहीं खा रही थी, जिससे वह सूख कर कांटा सी हो गई। अधिकांश समय वह सोती रहती थी। उसकी चोट धीरे-धीरे भर रही थी, लेकिन उसके माथे का घाव बहुत गहरा था। ठीक हो जाने के बाद भी उस घाव का निशान सारी ज़िन्दगी उसके साथ रहा।

ब्रोडस साहब को तो विश्वास हो चला था कि हैरिएट अब ज़िंदा नहीं बचेगी। इसलिए वह उसे बेचने की कोशिश कर रहे थे। कई बार वे गुलामों के खरीदारों को उसके झोंपड़े में ले कर आये, जहाँ हैरिएट टाट के चिथड़ों पर लेटी होती। लेकिन हर खरीदार एक ही जवाब देता, "यह ज़िंदा बच भी गई, तो किसी काम की नहीं रहेगी। मैं इसके लिए एक पैसा भी नहीं देने वाला।"

सर्दियाँ आ गईं, और हैरिएट अभी भी ज़िंदा थी। उसके माता-पिता ईश्वर का धन्यवाद दे रहे थे, लेकिन फिर भी उसके लिए चिंतित थे। हैरिएट ने चलना-फिरना और बातचीत करना शुरू कर दिया था, और घर के छोटे-मोटे काम भी कर पा रही थी। लेकिन कभी-कभी कुछ भी करते-करते वह अचानक से सो जाया करती।

ऐसा तब भी होता था जब वह बातचीत कर रही होती। वह अचानक बोलना बंद करके आँखें बंद कर लेती, और कुछ मिनटों के लिए सो जाती। और फिर जाग कर फिर से बोलने लगती, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

इन दौरों की वजह से ब्रोडस परिवार को विश्वास हो चला था कि हैरिएट का दिमाग़ अब पूरी तरह ठीक नहीं है। इसलिए उन्होंने उसे बेचने की कोशिशें और तेज़ कर दीं। लेकिन हैरिएट नहीं चाहती थी कि उसे बेचा जाये, और वह अपने परिवार से दूर हो जाए। और निश्चय ही उसका दिमाग़ पूरी तरह ठीक था। पंद्रह साल की यह लड़की बहुत होशियार थी।

जब भी ब्रोडस साहब किसी खरीदार को लेकर उसके झोपड़े पर आते, हैरिएट ऐसा नाटक करती जैसे उसे फिर दिमाग का दौरा पड़ रहा हो। या फिर वह बहुत बेवकूफ होने का नाटक करती। उसके परिवार वाले भी यही दिखावा करते जैसे उसका यह नाटक वास्तव में सच हो। इसलिए कोई भी उसे खरीदने को तैयार न होता।

समय के साथ हैरिएट का स्वास्थ्य सुधरा, और उसकी शक्ति वापस आने लगी। अब वह भारी वस्तुएं आसानी से उठा लेती। सामान से लदी गाड़ी को वह मीलों तक खींच सकती थी। वह खेतों में बैलों को हाँकती, और दिन भर जुताई करती। लोग कहते थे कि पूरे मेरीलैंड में किसी भी आदमी से वह ज़्यादा ताकतवर है। उसकी यह ताकत आगे चल कर उसके बहुत काम आने वाली थी।

हैरिएट का आज़ादी का सपना अभी भी ज़िंदा था। लेकिन कुछ समय के लिए उसने इसे किनारे कर दिया था। १८४४ में उसने जॉन टबमैन से शादी कर ली, जो एक आज़ाद नीग्रो था। उसे उम्मीद थी कि शायद वह आज़ाद उत्तरी क्षेत्र को ले जाने में उसकी मदद करेगा। लेकिन उसका विवाहित जीवन अधिक सुखी नहीं था, और जल्दी ही दोनों अलग हो गए। फिर भी हैरिएट ने टबमैन नाम का इस्तेमाल जारी रखा।

कुछ समय बाद ही ब्रोडस के गुलामों ने सुना कि शायद उनमें बहुतों को बेच दिया जायेगा। हैरिएट को लगा कि अब आज़ादी की राह पकड़ने का समय आ गया है। इसमें मदद के लिए उसने एक श्वेत औरत का रुख किया, जो पास ही रहती थी। इस औरत ने एक बार हैरिएट से कहा था, "तुम्हें कभी भी कोई ज़रूरत हो तो मेरे पास आ जाना।" हैरिएट समझ गई थी, कि उसका मतलब उसे आज़ाद कराने से था।

किसी को बताये बिना हैरिएट बकटाउन के लिए निकल पड़ी, जहाँ वह औरत रहती थी। जब वह उसके घर पहुंची, हैरिएट ने उससे कहा,"आपने मुझसे कहा था कि ज़रूरत पड़ने पर आपके पास आऊं। इस समय मुझे आपकी मदद चाहिए।"

उस औरत ने हैरिएट को एक कागज़ दिया जिस पर दो नाम लिखे थे, और उस पहले घर को पहुँचने का रास्ता भी लिखा था, जहाँ से उसे मदद मिलनी थी।

जब हैरिएट पहले घर को पहुंची, उसने उस घर की औरत को वह परचा दिखाया। उस औरत ने हैरिएट से कहा कि वह झाड़ू उठा कर मैदान की सफाई शुरू कर दे। इस प्रकार किसी आने-जाने वाले को यह शक नहीं होगा कि वह एक भगोड़ी गुलाम है।

उस औरत का पति, जो एक किसान था, शाम को घर आया। अँधेरे में उसने अपनी गाडी पर कुछ सामान लादा, और हैरिएट को भी छिपा का गाडी में बिठा दिया, और फिर गाडी लेकर एक दूसरे शहर को चल पड़ा। वहां पहुँच कर उसने हैरिएट को गाड़ी से उतारा और उसके अगले "ठिकाने" पर पहुंचा दिया।

इस तरह कई बार हैरिएट तो एक से दूसरे ठिकाने पर पर पहुँचाया गया। वह भूमिगत रेल पर सवारी कर रही थी, और करती ही रही जब तक वह पेनसिलवेनिया नहीं पहुँच गई। आखिरकार अब वह आज़ाद थी। सालों बाद उसने इस घटना को याद करके कहा "जब मुझे पता चला कि मैं गुलामी को पीछे छोड़ कर आज़ादी की सीमा में प्रवेश कर चुकी हूँ, मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैंने अपने हाथों की ओर देखा और सोचा, क्या मैं वही इंसान हूँ? सब कुछ इतना ख़ूबसूरत नज़र आ रहा था। सूर्य की सुनहरी किरणें पेड़ों के बीच से छन कर खेतों में फ़ैल रही थीं, और मुझे लग रहा था कि जैसे मैं स्वर्ग में आ गई हूँ।"

लेकिन हैरिएट का यह स्वर्ग दोषहीन नहीं था। "मैं आज़ाद अवश्य थी," उसने कहा, "लेकिन इस आज़ाद संसार में मेरा स्वागत करने वाला कोई भी नहीं था। मैं इस अजनबी धरती पर बिलकुल अजनबी थी। आखिरकार मेरा घर तो मेरीलैंड में ही था, जहाँ मेरे माता-पिता, भाई-बहन और दोस्त, सभी थे। मैं तो आज़ाद थी, लेकिन उन्हें भी तो आज़ादी चाहिए। मैं यहाँ उत्तर में घर बसाउंगी, और उन सब को यहाँ लाऊंगी।"

और अगले कुछ सालों में हैरिएट ने वही किया जिसका उसने प्रण लिया था। अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डाल कर भी, उसने बार-बार दक्षिण की यात्रा की, और दूसरे गुलामों को आज़ादी तक ले कर आई। अपने परिवार वालों, मित्रों, और बहुत से अन्य गुलामों को, कुल मिला कर तीन सौ से भी अधिक स्त्री-पुरुषों और बच्चों को, उसने गुलामी से छुटकारा दिलाया।

हैरिएट गुलामों के बीच बहुत प्रसिद्ध और लोकप्रिय हो गई। वे उसे अपनी "मूसा" कहते, क्योंकि वह उन्हें उनकी गुलामी के बीहड़ से निकाल कर आज़ादी की ओर ले जाती। गुलामों के मालिक उससे घृणा करते थे, और उन्होंने उसे पकड़ने के लिए ४०००० डॉलर का इनाम घोषित कर दिया था।

लेकिन कभी भी कोई उसे पकड़ नहीं पाया। वह भूमिगत रेलवे की सबसे मशहूर "कंडक्टर" बन गई थी। और एक बार उसने कहा,"मेरी रेल कभी भी पटरी से नहीं उतरी, और मैंने कभी किसी यात्री को नहीं खोया।"

अमेरिकी गृह युद्ध में भी हैरिएट की विशेष भूमिका रही। उसनेअमेरिकी संघ की ओर से युद्ध किया, और एक जासूस और स्काउट की भूमिका में शत्रु सीमा के अंदर घुस कर पीछे से कई आक्रमण किये। और एक नर्स की भूमिका में उसने उत्तरी और दक्षिणी, दोनों ही सेनाओं के घायलों और बीमारों की सहायता की।

गृह युद्ध के बाद हैरिएट ने ऑबर्न न्यूयोर्क में अपना घर बनाया। लेकिन अपने अच्छे कार्यों को करना उसने जारी रखा। १० मार्च १९१३, यानी अपनी मृत्यु के दिन तक, मूसा कही जाने वाली इस महिला ने अनेक सराहनीय कार्य किये। महिलाओं के मताधिकार के लिए उसने संघर्ष किया। नीग्रो बच्चों के लिए स्कूल बनाये। निर्धन, वृद्ध और असहाय लोगों के लिए उसने जो बन पड़ा सो किया।

तिरानवे वर्ष की अवस्था में में जब हैरिएट टबमैन का देहांत हुआ, उसे सैनिक अंत्येष्टि करके सम्मानित किया गया। जिस महिला ने अपने लोगों के लिए इतने संघर्ष किये थे, उसके लिए निश्चय ही यह उपयुक्त श्रद्धांजलि थी।

समाप्त